

दिव्याभिमंपत्ति

वर्ष : 5, अंक : 32

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 1 से 7 अप्रैल 2020

पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

कोरोना लॉकडाउन समस्याओं के समाधान का प्रयास

आज पूरा देश लॉक डाउन है और करीब 60% आदमी, औरत और बच्चे इस परियुक्त को एंजॉय करते से लग रहे हैं। सब घर में हैं और टीवी या मोबाइल पर करोना से संबंधित खबर पढ़ने, बनाने या बतियाने में लगे हैं करोना ना हो गया कोई त्यौहार हो गया। सावधान यह हनीमून खत्म होने वाला है और सच्चाई सामने आने वाली है, जो सोच से ज्यादा गंभीर और विनाशकारी हो सकती है। प्रधानमंत्री ने टीवी पर 21 दिवस का लॉकडाउन क्या बोला तो सबने उसे अक्षरक्ष पालन करने की थान ली और उस के मर्म समझे, लॉकडाउन का मतलब *leisure activities* और *ancillary activities* को कंट्रोल करना है कुरुक्षेत्र-द्वारा को ब्लॉक करना नहीं। अगर किसान ने लॉकडाउन किया तो एक से ढेर साल बाद क्या खाओगे उम्मीद है कि मांसाहार तो नहीं जैसा कि आज के हालातों हैं और उनका जनक मांसाहार को बताया जा रहा है।

आज के हालातों को देखकर ऐसा लगता है कि कोविड-19 के अलावा कोई बीमारी ही नहीं ना किसी को हार्टअटैक होगा ना किडनी प्रॉब्लम मलेरिया, टाइफाइड ना कुछ और बच्चे जन्म नहीं लेंगे, नॉर्मल खासी जुखाम बुखार ना होगा, करोना को छोड़ कर बाकी सब बीमारियों के लिए जैसे संजीवनी से दी गई है। हाँस्पिटल और दवाखाने में डॉक्टरों के अलावा पैरामेडिकल स्टाफ, टेक्नीशियन, केमिस्ट और नॉन मेडिकल स्टाफ जैसे स्वीपर, कैटीन वाला, एडमिनिस्ट्रेटर, थोबी, कचरा इकट्ठा करने वाले, गार्ड, ड्राइवर उन सबकी बराबर से जरूरत होती है।

इसी तरह रोजमर्या की चीजों की आवाद उपलब्धता के लिए उत्पादनकर्ता के बाद

ट्रांसपोर्टर, ड्राइवर
क्लीनर, सामान
पैक करने के

लिए

पैकिंग

इंडस्ट्री

उसकी

सप्लाई

चेन, जैसे

पैकिंग

पैट्रियल,

पैकिंग

पैट्रियल का

बारदाना। इस तरह

ये पैकिंग सामान ट्रांसपोर्टर होगा तो फिर से ट्रक ड्राइवर क्लीनर इनकी ज़रूरत पड़ेगी पेट्रोल भराया जाएगा और पेट्रोल पंप और उसकी डिलीवरी चेन

अलग से है। फिर वहां से

सामान वेराहाउस में जाएगा,

फिर डिस्ट्रीब्यूटर के पास,

वहाँ से रिटेल कांटर पर

पूरा नेटवर्क है और सोसे से

फाइनल डेस्टिनेशन तक

पहुंचने में कई सारी

ancillary इंडस्ट्रीज हैं जो

बंद नहीं की जा सकती।

इन सबके अलावा लॉ एंड ऑर्डर एनफोर्स करने के लिए, अधिकारियों के अलावा उनका सपोर्ट स्टाफ वह भी तो लगेगा, unka मूख्यं भी होगा।

फिर जो बुजुर्ग हैं और अकेले हैं उनकी देखभाल कैसे हो उसका रोडमैप भी जरूरी है। जो गरीब है और अपने शहर से बाहर हैं और टिकिन या होटल या कैटीन पर ही खाते थे उनका क्या

होगा ऐसे कई सवाल हैं जिन के जवाब हम नीचे वालों को ही खोजने होंगे प्रधानमंत्री जी हर किसी का अलग अलग जवाब तो दे नहीं सकते।

जैसे युद्ध के समय नागरिक भी ट्रेनिंग लेकर नोन कॉम्बैटेंट काम करते थे उसी तरह कोविड-19

आपदा के समय में वह युवा जो जीव

विज्ञान से हैं ट्रेनिंग उनको अगर दी जाए तो पैरामेडिकल्स की तरह उनसे काम लिया जा सकता है। ट्रेन की बोगी, स्कूल और अन्य जगह को क्रॉर्टीन सेंटर बनाने में स्टाफ की भी तो जरूरत पड़ेगी जो इस तरह से पूरी हो सकती है।

इसके अलावा नीचे कुछ सुझावों पर अमल करके लॉकडाउन पैरियड में भी इफेक्टिव्ली कार्य, भयमुक्त हा क्या जा सकता है।

सबसे पहले वो इंडस्ट्रीज आईडॉफाई की जाए जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ी हो रोजमर्या की आवश्यकताओं से। फिर उनके यूनियन लीडर से बात की जाए (यूनियन का ऐसा फायदा भी तो लिया जा सकता है)। यूनियन लीडर्स एरिया वाइज अपने एजेंट या डीलर को आईडॉफाई करें। लोकल एडमिनिस्ट्रेशन उन वाइज एजेंसीस या डीलर्स से काटेक्ट कर

उनके यहां सिलेक्टेड आईडॉफाई स्टाफ के लिए आवागमन का पास या बेज बनवा दे यह बेज या पास इसलिए जरूरी है जिससे बार-बार रोककर पूछताछ करने में समय और रिसोर्स दोनों की बर्बादी रुक सके। यह जो स्टाफ सलेक्ट किया गया है उनकी इनहाउस ट्रेनिंग हो उनके नियुक्तकर्ता द्वारा और मास्क, सैनिटाइजर डिसइन्फेक्शन तथा डिस्टर्निंग का पूरा ध्यान ध्यान रखा जाए। साथ ही वर्क प्लेस और प्रयुक्त गाड़ियों की क्लीनिंग और सैनिटाइजिंग का भी पूरा ध्यान रखा जाए।

एक और चीज जो हमें करनी चाहिए वो है बच्चों को एंगेज करना। बच्चों में बहुत ज्यादा ऊर्जा होती है उनकी ऊर्जा बेकार ना हो, क्योंकि स्कूल तो बंद कर दिए गए हैं तो टीवी पर एजुकेशन चैनल शुरू किए जाएं, जैसे युवाओं के लिए हैं। एक से बारहवें तक के बच्चों के लिए भी उनके लेवल के चैनल शुरू किए जाएं। बात सिर्फ कुछ समय की नहीं है बल्कि उत्तरक दिमाग को सूखने से बचाने की है। नहीं तो रंक बार खाली बैठे तब देखने की आदत लग जाए तो बदलना मुश्किल हो जाएगा। याद रखें कि लाकडाउन पिरीयड सेल्फ कंट्रोल के लिए हैं जो कि बर्बाद करने के लिए इसलिए सिर्फ प्रधानमंत्री जी के कहने को मशीन की तरह मानने से ज्यादा उसका मर्म समझकर उसे व्यवहार में अमल में लाया जाए। यह समय खुद से परिचय करने में सदृप्योग करने का है। यह वह समय है जो हम हमेशा से चाहते थे और मिलता नहीं था।

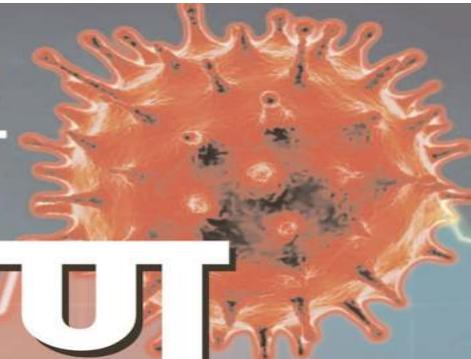
जय विश्व! जय भारत!
डॉ सोनल मेहता



डॉ सोनल मेहता

कोरोना वायरस

ऐसे बचें संक्रमण से

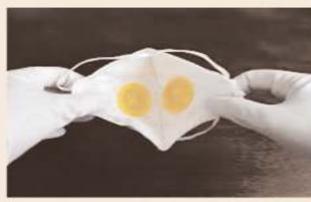


कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा, जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। इटली के पर्यटकों के दल के कोरोना से संक्रमित होने के बाद भारत में इसके पुष्ट मामलों की संख्या बढ़ती जा रही है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की ज़रूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), पब्लिक हेल्थ इंग्लैण्ड और नेशनल हेल्थ सर्विस (एनएचएस) से प्राप्त सूचना के आधार पर कोरोना वायरस से बचाव के तरीके -

लोगों की स्ट्रीनिंग हो या फिर लैंब में लोगों की जांच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है। इसके अलावा किसी भी तरह की अपार्टमेंट से बचने, खुद की सुरक्षा के लिए कुछ नियंत्रण जारी किए हैं, जिससे कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है।

किसे पहनना चाहिए मास्क :

अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की ज़रूरत नहीं है। अगर किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं तो मास्क पहनना होगा। जिन लोगों को बुखार,



कफ या सांस में तकलीफ की शिकायत है, उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरंत डॉक्टर

के पास जाना चाहिए।

मास्क पहनने का तरीका:

मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए। अगर हाथ लग जाए तो तुरंत हाथ धूना चाहिए। मास्क को ऐसे पहनना चाहिए कि नाक, मुँह और वाणी का हिस्सा उसके ढाका रहे। मास्क उतारते वक्त भी मास्क की लाइंट का या फिला पकड़ कर निकलना चाहिए। मास्क नहीं धूना चाहिए। हर रोज मास्क बदल दिया जाना चाहिए।

कोरोना के खतरे को कम करने के उपाय



- कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं।
- आपे हाथ अच्छी तरह धूएं। खांसते या छींकते वक्त अपना मुँह ढक लें।
- हाथ साफ नहीं हो तो ओर्जो, नाक और मुँह को धूने से बचें।



कोरोना वायरस के लक्षण

(कोवाइड-19) में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है। फिर एक हाल्ते वाला सांस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि कोरोना वायरस का संक्रमण है।

- कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में नियोनिया, सास लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किछीनी फैल होना, यहां तक कि मौत भी हो सकती है।
- उच्चदरक लोग और जिन लोगों को पहले से ही कोई गौमारी है (जैसे अस्थमा, मधुमेह, दिल की बीमारी है) उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है।
- कुछ और वायरस से भी इसी तरह के लक्षण होते हैं जैसे जुकम और पलू में।

कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब

इस समय कोरोना वायरस का कोई इलाज नहीं है, लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दिशाया दी जा सकती है। जब तक आप लैंब न हो जाएं, तब तक दूसरों से अलग रहें। कोरोना वायरस के इलाज के लिए वैत्सीन विकासित करने पर कम तरह रहते हैं। इस साल के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर लिया जाएगा। कुछ अस्पताल एंटी-वायरल दवा का भी परीक्षण कर रहे हैं।



संक्रमित ठीक भी हो रहे हैं

दुनिया भर में कोरोना वायरस ने कोहराम बना रखा है। आम हो या खास, हर कोई इसके खतरे से बचने की ज़ुरू में लगा है। इसका खोफ दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहा है। लोगों को लग रहा है कि अगर कोई इस वायरस की चेष्टे में आ गया तो उसकी मौत हो जाएगी, मगर ऐसा नहीं है।

घर के सामान की ऐसे करें सफाई

रिसर्च में बताया गया है कि जानवरों से हँसानों में आ सकने वाले कोरोना वायरस को किसी भी सतह से एक मिनट में हटाया जा सकता है। इसके लिए 62 फीसद से 71 फीसद एथनोल, 0.5 फीसद लाइटोक्सिसाइट या 0.1 फीसद सोडियम हाइपोक्लोराइट या ब्लीच का इस्तेमाल करना चाहिए।

कोरोना का संक्रमण फैलने से ऐसे रोकें

- अगर संक्रमित इलाज के साए हैं या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में रहे हैं तो अकेले रहने की सलाह दी जा सकती है। घर पर रहे ऑफिस, स्कूल या सार्वजनिक जगहों पर न जाएं सार्वजनिक वाहन जैसे बस, ट्रेन, ऑटो या टैक्सी से यात्रा न करें। घर में मेहमान न बुलाएं। घर का सामान किसी और से मंगाएं। अगर आप और भी लोगों के साथ रह रहे हैं तो ज़्यादा सतर्कता बरतें। अलग कर्मर में रहें और जागा रसोई व बाथरूम को लगातार साकरें।
- 14 दिनों तक ऐसा करें रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके। कोरोना वायरस जैसे वायरस शरीर के बाहर बहुत ज्यादा समय तक जिंदा नहीं रह सकते।

भारत में कोरोना संकट के बीच पर्यावरण के अच्छे दिन

भारत ही नहीं विश्वभर में कोरोना का भय व्यत है। हर कोई अपने जीवन की सुरक्षा में लगा है। सरकारें प्रयत्न कर रही हैं लेकिन इंसान पहले से अधिक स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति सचेत दिख रहे हैं। हर कोई इसी प्रयास में लगा है कि उसे जुखाम, सिरदर्द या बुखार न हो। यही कारण है कि दुनिया के देशों में अधिकांशतः लोग घरों में सीमित हो गए हैं। वस्तुतः इस दृश्य के बाहर की एक और दुनिया है, पशु-पक्षियों की। जहां कलतक सुरीली

चहचहाहट सुनाई देना बंद-सी हो गई थी, इसानी खौफ से जिन पक्षियों ने अपने को कहीं किसी धोंसले में छिपा लिया था और जो पशु किसी गुफा या कंदरा में दुबक गए थे, अब बिना भय के विचरण करते देखे जा सकते हैं। शहरों की वीरानी के बीच इनका यूं बिना भय बाहर आकर विचरना, कहीं न कहीं पर्यावरण की दिशा से सुखद संयोग कहा जा सकता है।

भारत में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या व आर्थिक विकास और शहरीकरण व औद्योगिकरण में अनियंत्रित वृद्धि, बड़े पैमाने पर कृषि किसियाँ तथा तीव्रीकरण तथा जंगलों का नष्ट होना इत्यादि भारत में पर्यावरण संबंधी समस्याओं के प्रमुख कारण हैं। इसलिए प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में बन और कृषि-भूमिकरण, संसाधन रिकिरण (पानी, खनिज, बन, रेत, पत्थर आदि), पर्यावरण क्षणण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता में कमी, परिस्थितिकी प्रणालियों में लचीलेपन की कमी, गरीबों के लिए आजीविका सुरक्षा को शामिल किया गया है। यह अनुमान है कि देश की जनसंख्या आनेवाले कुछ वर्षों में बढ़कर दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाले देश चीन को भी पीछे छोड़



देगी। आज विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4 लाख परन्तु विश्व की जनसंख्या का 17.5 लाख धारण कर भारत का अपने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव काफी बढ़ गया है। पानी की कमी, मिट्टी का कटाव और कमी, बनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण के कारण कई क्षेत्रों पर बुरा असर पड़ता है। ऐसे में सहज समझा जा सकता है कि हमारा पर्यावरण वर्तमान में कितना अधिक मनुष्यगत दबाव झेल रहा है।

वस्तुतः इन परिस्थितियों में कहना होगा कि यह कोरोना का भय सिर्फ पशु-पक्षियों को ही आराम लेकर नहीं आया, मनुष्यों के स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भविष्य के लिए आराम लेकर आया है। क्योंकि जिस तरह से पर्यावरण में विषेश गैसों का अंतर घटा है, उससे यह तो साफ हो गया है कि जिन तमाम बीमारियों से लोग अनायास ही काल में चले जाते थे, उनमें बहुत बड़ा कारण अशुद्ध हवा था, लेकिन अब हवा का इंडेक्स लगातार सुधार रहा है। कोरोना वायरस के भय ने लोगों की अधिक जाने-आने एवं लम्बी यात्राओं पर रोक लगी है। देश भर में लॉकडाउन है। इस कारण वातावरण में तेजी से सुधार हो रहा है। स्वास्थ्य मानकों के लिए हवा का स्तर जैसा होना

चाहिए वह कई जगहों पर आ गया है। अनेक स्थानों पर यह आने की प्रक्रिया में है।

भारत सरकार के संचालित सिस्टम ऑफ एयर क्लाइटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च इस समय जो कह रहा है, उसपर हम सभी को गंभीरता से विचार करना होगा और इसके लिए हमें कुछ हद तक खुश भी हो लेना चाहिए। वस्तुतः देश के 90 से अधिक शहरों में पिछले कुछ दिनों में न्यूनतम वायु प्रदूषण दर्ज किया गया है। कोरोना वायरस प्रकोप के कारण किए गए उपायों से दिल्ली में पीएम 2.5 में 30 फीसद की गिरावट आई है। अहमदाबाद और पुणे में इसमें 15 फीसद की कमी आई है। नाइट्रोजेन ऑक्साइड (एनओएक्स) प्रदूषण का स्तर, जो श्वसन स्थितियों के जोखिम को बढ़ा सकता है, वह भी कम हो गया है। यहां ध्यान देने योग्य है कि एनओएक्स प्रदूषण मुख्य रूप से ज्यादा वाहनों के चलने से होता है। एनओएक्स प्रदूषण में पुणे में 43 फीसद, मुंबई में 38 फीसद और अहमदाबाद में 50 फीसद की कमी आई है।

इसीलिए ही आज पर्यावरणविद कह रहे हैं कि पर्यावरण की कीमत पर विकास के जुनून को रोकने होंगा। पर्यावरणविद् एन.

क्लाइटी इंडेक्स सिर्फ 63 हो गया है जबकि लॉकडाउन से पहले 248 था। यानी यहां की हवा बेहद खराब थी। यहां यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि पिछले साल आईव्ही एयर विजुअल द्वारा कराए गए विश्व वायु गुणवत्ता 2019 सर्वे के अनुसार दुनिया के 30

सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में भारत के 21 शहर शामिल हैं। इनमें एनसीआर के लगभग सभी बड़े शहर आते हैं। इस सूची में शामिल गाजियाबाद, गुरुग्राम, फरीदाबाद, पलवल, लखनऊ, बुलंदशहर, जींद, भिवाड़ी और हिसार में 20 मार्च को हवा की गुणवत्ता बेहद खराब थी। दिल्ली का पीएम-10 अपने सामान्य लेवल 100 माइक्रो ग्राम क्यूबिक मीटर से नीचे सिर्फ 58 पर आ गया है, जबकि पीएम 2.5 भी अपने सामान्य स्तर 60 एमीजीसीएम से आधा 31 रह गया है। यह अपने आपमें रिकॉर्ड है। इसी तरह से आज यहां पर अन्य शहरों में प्रदूषण नहीं है।

वस्तुतः इस लॉकडाउन की स्थानियों में अब वक्त आ गया है कि हम सभी सबक लें, सिर्फ इंसान को ही अपने हिसाब से जीने का हक नहीं है, प्रकृति में हर पशु-पक्षी को ही पर्यावरण पर उतना ही अधिकार है, जितना कि मनुष्यों का है। यह जानकर और मानकर आज हमारे अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने की जरूरत आ गई है। कोरोना महामारी आज नहीं तो कल चली ही जाएगी लेकिन फिर कोई बायरस महामारी न बने, इसके लिए जरूरी हो गया है कि हम पर्यावरण के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें। आगे भी यूं ही पक्षियों की चहचहाहट बनी रहे और पर्यावरण के आए यह अच्छे दिन कभी जुदा ना हों, यह देखना अब हम सभी की जिम्मेदारी है।

करोना का कहर बच्चों के लिए टेक अवे



आज बच्चे बड़े खुश दिखाई दे रहे हैं, अपनी मर्जी से उठना-बैठना और कोई स्कूल जाने का टेंशन नहीं करोन की वजह से स्कूल की निरुत्साहता ने और एकरसता से आजादी का यह अपृत्याशित ब्रेक, यह पढ़ाई के प्रति उदासीनता, अलार्मिना है। हमारे यहाँ वही सब्जेक्ट और टॉपिक्स पढ़ाए जा रहे हैं जो विश्व के विकसित देश पढ़ा रहे हैं। पर वहाँ की तरह हमारे यहाँ कौशल विकास और ज्ञान पर नहीं सिर्फ जानकारी डाउनलोड करने और शत-प्रतिशत अंक लाने पर ही हम जोर देते हैं रचनात्मकता पर नहीं चरित्र निर्माण का रस्मी प्रयास भर है मूल्यों का बीजारोपण नहीं। फॉर्मल एजुकेशन और प्रैक्टिकल एजुकेशन में खार्ड चौड़ी है फलस्वरूप व्यापार या नौकरी हम वहाँ करते हैं जहाँ हमें इंटरेस्ट नहीं। इसके परिणाम स्वरूप कुठाओं, तनाव और हिंसा (स्वयं से और सब से)। यह स्थिति स्वयं, समाज और राष्ट्र के विकास के लिए बाधक है। बाल्यावस्था तो छाड़िए शेशव काल से ही हम बच्चों पर जानकारी है (ज्ञान नहीं, क्योंकि वह तो हमें भी कम ही है) वह स्टेटस सिंबल हो जाता है। यह शिक्षा को एक सांचे में बदल देता है %वन साइज़ फिट्स ऑल% जो असंभव है, परिणाम स्वरूप बच्चों में कुठां, कैद का भाव और शिक्षा के प्रति प्रेरणा का अभाव जैसी भावना आजाती है। कुछ बिंदु हैं जो केंद्र और प्रदेश के राजनीतिज्ञ, एक्सपर्ट और नौकरशाही के विचार करने योग्य हैं।

करोना ने स्कूल कॉलेज और यूनिवर्सिटीज़ चाहे बंद कर दिए हों पर घर जैसी प्रयोगशाला को हमारे लिए 24 घंटे, साते दिन खोल दिया, जहाँ कोई नहीं, कोई जज नहीं कर रहा, कोई मार्क्स नहीं दे रहा, किसी तरह का कोई कंपटीशन नहीं। है तो सिर्फ समय, बड़ों का अनुभव, और इंटरनेट का विशाल संसार जिसमें घर के बड़ों का मार्गदर्शन जरूरी है नहीं तो यह भस्मासुर का रूप भी ले सकता है अगर कट्टोल नहीं किया गया तो।

यहाँ बच्चों के सामने गूगल के रूप में ज्ञान का असीमित सागर है, उसमें डूब कर अपनी पसंद पहचानना, एक टास्क है जिसमें अनुभवी अधिभावक मदद कर सकते हैं फिर उस पसंद को कौशल बनाने की जिम्मदारी हम बच्चों पर डालें। यदि 3 घंटे भी रोज़ अपनी पसंद को हमने दिए तो 60 घंटे, हमें दूसरे लेवल पर ले जाएंगे, जहाँ से बस उसे संवारते रहना ही पड़ेगा। मान लीजिए कि आपके हुनर के शरीर में आत्मा डल गई और समय के उसमधे विकास और पैनापन आएगा।

दुनिया में इस समय कौशल ही महत्वपूर्ण है और उसी की जरूरत है। समाज में क्रिएटर्स, इन्फ्रारेटर्स, कम्युनिकेटर्स, लीडर्स और आउट आफ़ द बॉक्स थिंकर्स की जरूरत है। याद रखें यह सब अंतरिम उपाय है, एकदम से मिले समय के खजाने को अच्छे से सहेजने के लिए। फुल टाइम स्कूलिंग का कोई विकल्प नहीं है। यह समय बच्चों के लिए, आपके मार्गदर्शन में टेस्ट एंड ट्राई करने का है जिससे उनका इंटरेस्ट पता चले और अपनई क्षमता वह खुद ढूँढ़ें और खुद से खुद को तुम करें। इससे शिक्षा के प्रति उनका लगाव बढ़ेगा। एक बात और, भाषा का ज्ञान जितना गहरा होगा उतना बड़ा संबल होगा।

तो चलें कोरोना के कहर के सैलाब को सही दिशा में मोड़, बच्चों में संस्कार, सुख और सफलता की लहलहाती फसल खिलाने।

जय विश्व! जय भारत!

पारंपरिक ज्ञान ही जल संकट का अकेला समाधान नहीं: शेखावत

घरों को पाइप के जरिए वाटर सप्लाई पहुंचाने वाली तमाम पुरानी योजनाएं विफल रही हैं। क्या आप सोचते हैं कि जल जीवन मिशन 100 फीसदी वाटर सप्लाई सभी ग्रामीण घरों को पाइपलाइन के जरिए पहुंचा पाएगा? साथ ही यह जल जीवन मिशन पुरानी योजनाओं से कैसे अलग है?

देश में अब तक चाहे केंद्र की सरकार रही हो या प्रदेश की सरकार सभी ने पहले की योजनाओं में सिर्फ इस दृष्टिकोण को ही ध्यान में रखा कि लोगों को अपने आस-पास की परिधि में ही हैंडपंप, स्टैंड पोस्ट्स या भू स्तरीय जलाशयों से पीने का पानी उपलब्ध हो जाए। जबकि पहली बार हम पाइपलाइन के जरिए 100 फीसदी स्वच्छ जल आपूर्ति की बात कर रहे हैं। आंकड़ों के हिसाब से देखें तो आज देश के भीतर सिर्फ 18 फीसदी घरों में पाइपलाइन के जरिए पेयजल की आपूर्ति होती है। इसी आंकड़े के आधार पर यह कहा जाता है कि पहले की योजनाएं विफल हुई हैं। वास्तविकता में पुरानी योजनाओं का मतंव्य सिर्फ लोगों की पानी तक पहुंच को बनाना था। यदि ऐसे देखें तो आज 80 फीसदी आबादी तक पानी की पहुंच बन गई है। हम जनभागीदारी पर जोर दे रहे हैं। इसमें गैर लाभकारी और अन्य संगठन को भी शामिल किया गया है। हमें पूरा विश्वास है कि राज्यों के सहयोग से निश्चित तौर पर स्वच्छ अधियान की तरह इस लक्ष्य को भी पूरा करेंगे।

जलापूर्ति की ज्यादातर योजनाएं भू-जल या सतह जल पर ही निर्भर हैं ऐसे में मिशन के तहत पानी के स्रोतों की स्थिरता को किस तरह बरकरार रखा जाएगा?

निश्चित रूप से स्थिरता एक चिंता का विषय है। खासकर भू-जल की स्थिरता और भी बड़ा प्रश्न है क्योंकि अब तक का अनुभव जो है उसमें चाहे राज्य की योजनाएं हो या केंद्र के सहयोग वाली योजनाएं सब जगह यह चुनौती सामने आई है। लेकिन पहली बार हमने किसी योजना में जल स्रोत की स्थिरता और ग्रे-वाटर डिस्पोजल (बाथरूम, किचन आदि से निकलने वाला गंदा पानी) का भी ध्यान रखा है। यह सामान्य अनुभव है कि घर में जने वाला पानी लगभग 75 फीसदी ग्रे-वाटर के रूप में बाहर आता है। इसका उपचार करके या तो सिंचाई या फिर भू-जल रीचार्ज में उसका उपयोग किया जाएगा। पिछले कई वर्षों से महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (एमजीएनआरईजीए) के तहत प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन परियोजनाओं के रूप में भी यह काम किया जा रहा था। हालांकि किए जा रहे काम और जरूरी तकनीकी के बीच एक खाइ है। हम काम और तकनीकी के कन्वर्जेंस के तहत इस पर और अधिक जोर देंगे। 15वें वित्र आयोग ने भू-जल रीचार्ज परियोजनाओं के लिए अपनी संस्तुति में 30,000 करोड़ रुपये का आवंटन किया है।

शौचालय निर्माण के अलग-अलग मिशन के तहत यह देखा गया कि ठेकेदार काम में शामिल होते थे और बेहद निम्न स्तर का काम उनके जरिए किया जाता था। जलशक्ति अधियान में ऐसा न हो इसके लिए क्या किया गया है?

स्वच्छ भारत मिशन लोगों की भागीदारी से शुरू हुई पहल थी। पहली बार इस छोटे से कदम से महिला सशक्तिकरण भी दिखा। इसी तरह जल जीवन मिशन में समुदाय स्तर पर पानी समितियां ही परियोजना को लागू करने वाली संरक्षक हैं। इससे समुदायों के बीच स्वामित्व का भाव पैदा होगा और परियोजनाएं टिकाऊ होंगी। परियोजना में वस्तुओं की गुणवत्ता और दरों की सीमाएं तय होने से न सिर्फ संरचनाएं गुणवत्तापूर्ण होंगी बल्कि ठेकेदारों की नजर में यह एक मुनाफे का स्रोत नहीं होगा।

हमारे देश में जल प्रबंधन का मॉडल विकसित करने वाले कई प्रतीकात्मक गांव थे लेकिन रुचि खत्म होने और सहयोग न मिलने के कारण यह लुप्त हो रहे। जल शक्ति अधियान कैसे इस समस्या का समाधान करेगा?

देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें बेहतर काम हुए हैं। कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जहाँ उन्हें प्रेरणा नहीं मिली है। ऐसे कई प्रतीकात्मक गांव भी विफल हुए जिन्होंने बिना तकनीकी ज्ञान के काम किया। अनुकूल परिणाम न मिलने के कारण वे हतोत्साहित हो गए। हमें भू-गर्भ संरचनाओं के अध्ययन और उन्हें पहचानने की जरूरत है। अनुकूल परिणाम से ही प्रेरणा मिलती है, इसलिए तकनीकी ज्ञान की भी जरूरत है। हमने कुल 25 लाख वर्ग किलोमीटर भू-जल संकट क्षेत्र में 11 लाख वर्ग किलोमीटर जलभर (एक्रिफर) की मैपिंग की है। मैपिंग का काम पूरा होते ही हमें सही तकनीकी के इस्तेमाल और उपयोग का पता चलेगा। सही तकनीकी से ही परियोजनाएं प्रभावी होंगी। साथ ही समुदाय, गांव और जिले एक साथ इससे प्रेरित होंगे और प्रतिस्पर्धी रूप से काम करेंगे।

जानकारों का मानना है कि पारंपरिक ज्ञान से ही जलसंकट का समाधान निकल सकता है। जलशक्ति अधियान इस ज्ञान को प्रेरित करने के लिए क्या कर रहा है?

यह कहना सही नहीं है कि पारंपरिक ज्ञान ही जलसंकट का अकेला समाधान है। लेकिन हाँ हमारे पूर्वजों ने कई वर्षों के अनुभव और अभ्यास से किसी खास क्षेत्र के लिए खास तकनीकी विकसित की थी। मिसाल के तौर पर जलसंकट वाले बुंदेलखंड में बुंदेला और चंदेला राजों ने हजारों तालाब बनाए।